॥ चेतनचरित्र भाषा ॥

* पंडित भैया भगवतीदास कृत *

जिसको

सर्व जैनीभाइयों के पढ़नार्थ

मुन्शी नाथूराम लमेचू ने

शुद्धता पूर्वक

लखनऊ

लाला भगवानदास जैन के

जैनप्रेस में [illegible]

प्रथमवार १००० मूल्य

❀ ओंनमः सिद्धं ❀

॥ अथ चेतनचरित्र भाषा ॥

॥ दोहा ॥

श्रीजिननाथ प्रणामकर भावभक्तिमनआन ।
चेतन अरु कुछ कर्मको करों चरित्र वखान ॥ १ ॥
सोवतमहा मिथ्यात्वमें चहुंगति सेज बिछाय ।
बीतो काल अनन्त तहँ जागो चेतन राय ॥ २ ॥
जब भव स्थिति घटगई काललब्धिकोपाय ।
बीती मिथ्या नींदतहं स्वरुचि रही ठहराय ॥ ३ ॥
उपशमपायरुमोह को लयो विशुद्ध स्वभाव ।
हुआ सुबुध सम्यक निकट दूर भयोभ्रम स्वाव ॥ ४ ॥
देखे दृष्टि पसार के निज पर छोड़ प्रमाद ।
ये मेरे संग कौन हैं जड़ जो लगे अनादि ॥ ५ ॥
तब सुबुद्धि बोलीचतुर सुनहोकन्त सुजान ।
ये तेरे संग अरि लगे महा सुभट बलवान ॥ ६ ॥
कहु सुबुद्धि किम जीतिये येदुशमन सब घेर ।
ऐसी कला बताउ तू पास न आवें फेर ॥ ७ ॥
कहैसुमति इकशीख सुन जो तू मानेकन्त ।

कितो ध्याउ निज रूप तू या भाजिये भगवन्त ॥ ८ ॥
सुनके शीख सुबुद्धि की चेतन पकड़ा मौन ।
उठी कुबुद्धि रिसाय के यह कुल वन्ती कौन ॥ ९ ॥
मैं हूं बेटी मोह की व्याही चेतनराय ।
कहा नारि यह कौन है राखी कहां लुकाय ॥ १० ॥
तब चेतन हंस योंकही अब तुझसे ना नेह ।
मनलागो इस नारि से यह सुबुद्धि गुणगेह ॥ ११ ॥
तब कुबुद्धि रिसखाय के गई पिता के पास ।
आज पिया मैं परिहरी या से भई उदास ॥ १२ ॥

॥ चौपाई ॥

तब हि मोह नृप बोलो बैन । सुनिये पुत्री शिक्षा ऐन ॥
तू मनमें मत हो दिलगीर । बांध मंगावत हों तुझतीर १३
तब भेजो तिन काम कुमार । जो सब दूतो में सर्दार ॥
कहोबचन मेरो तुमजाय । क्योंरे अधमलगीक्या वाय १४
व्याही त्रिय क्यों छोड़त क्रूर । कहां गयो तेरो जु सऊर ॥
अबतुम चरण गहोतसुआय । यालड़ने कोकरो उपाय १५
ऐसे बचन दूत अवधारि । आयो चेतन पास विचारि ॥
नृपके वचनआन सवकहे । सुनकर चेतनरिसगहिरहे १६
अब हमवाको छूवें नाहिं । निज बल राजकरें जगमाहिं ॥
जायकहोअपने नृपपास । क्षणमेंकरोंतुम्हारोनाश ॥१७॥

तुम मन में मतरखो गुमान। हमबहुहैं यह एकसुजान॥
कर आवो तैयारी बेग। मैं भी बांधी तुमपरतेग॥१८॥
ऐसे बचन सुनत विकराल। दूतकहै जिमि कोपोकाल॥
उनसे तो तबहोहैरारि। जबतुममोहि डारिहोमारि॥१९॥
तब मनमें यह कियो बिचार। जीतों तोहो नामहमार॥
हारोंतो फिर नाम न लेउँ। चेतनके पुरपांव न देउँ॥२०॥
तव बोले चेतन राजान। जाउ दूत अपने स्थान।
फिर मतआवो इसपुरमाहिं। देखेसेबचहोतुमनाहिं॥२१॥

॥ सोरठा॥

दूत लयो प्रस्ताव मन में सो ऐसी कहत।
भलो बनो यहदाव आयो राजा मोहपर॥ २२॥
कही सर्ब समझाय बातें चेतनराय की।
नव न तुमको आय लड़नेका उद्यम किया॥ २३॥
सुन के राजा मोह सेनापति से यों कही।
अहो सुभट धर कोह घेरो जाय गमारको॥ २४॥
सज संज सबही शूर अपनी अपनी सेनले।
आये मोहहुजूर अबहि सु हमला कीजिये॥ २५॥

॥ चौपाई॥

राग द्वेष दो बड़े वजीर। महा सुभट रण थंभनवीर॥
फौजमध्य दोनोंसरदार। इनके पीछे फौजअपार॥२६॥

ज्ञानवरण बोलियो बैन । मेरी पंच जाति की सैन॥
जिससे जीव करों सबजेर । भवसागर में डारोंघेर २७॥
चढ़ें ज्ञान ऊपर मो लोग । यासे ना जाने उप योग॥
जानेनहींएकअरुदोय । सोमहिमासबमेरी होय॥ २८॥
तब दर्शनावरण यों कहै । जगके जीव अन्ध होरहे॥
सोसबहैमेरासुप्रसाद । नवरस वीर करेंउन्माद॥ २९॥
तबहि वेदना बोलो धीर । मोपर दोय जाति के वीर॥
महासुभट योद्धाबलसूर । तीर्थंकरतकरहैं हजूर॥ ३०॥
औरजीव बपुरे किस नात । मेरीमहिमा जगविख्यात॥
मोकोचहैंचतुरगतिमाहिं।मैंक्षणसुखमेंक्षणदुःखठाहिं३१॥
आयु कर्म बोलो बलवन्त । मेरे बश सब जीवभ्रमंत॥
मैं राखोंतोलोंथिररहैं । सिद्धविनासबमोबशबहैं॥ ३२॥
मोपर चार जाति के शूर । तिनसे युद्ध करेको क्रूर॥
चहुंगतिमेंमेरेसबदास । तबछूटेंजबलें शिववास॥ ३३॥
नामकर्म बोलो ललकार । मो विन कौन रचेसंसार॥
मैं कर्ता पुद्गलकारूप । तामें आय बसे चिद्रूप॥ ३४॥
सुभट त्रानवे मेरे संग । रूप रसीले हैं बहु रंग॥
इनकी सरवरिकोजगकरें । ये नितनयेनयेतनधरें॥३५॥
कहेगोत्र मो दो असवार । ऊंच नीच पथ चालनहार॥
सूरदन्शाको यहीस्वभाव । क्षणमेंरंकक्षणकमेंराव॥३६॥

अन्तराय बोलो गलगाज। पंच सुभट मेरे महराज॥ करमेंशस्त्रगहननादेंय। चेतनकासबबलहरिलेंय॥३७॥ सब के आगे ये पद धार। रण मे युद्ध करेंगे सार॥ ऐसे सुभटएकसौ बीस। इनकेगुण जानेजगदीश॥ ३८॥ ऐसे नायक सात उदार। परदल भजन बड़े जुझार॥ देखे सुभट जुड़ बहुबृन्द। तबेमोह नृपभयोअनन्द ३९॥

॥ अड़िल्ल छंद॥

राग द्वैषदोमित्रलयेसबटेरके। तुम लाओमोफौजभुवन मे हेरके। अट्ठाईस सवार बड़े जो शूर हैं। अरिपर धावत-एम नदी ज्यों पूर हैं॥ ४०॥ क्रोधादिक अति चण्ड न रोके रहत हैं। ज्यों हरि मृग को गहै त्यों अरि को गहत हैं॥ राग द्वैष तब गये जहां सब शूर हैं। लाये तुरत बुलाग सुमोह हजूर हैं॥ ४१॥ तब बोलो वच मोह जीव पर हम चढ़े। आज्ञा सुनते सूर सबे आगे बढ़े॥ सेना भई तयार बड़े विस्तार से। चले वार बरदारी लदे सो भार से॥ ४२॥ प्रथम फौज के सात सुभट आगे चले। तिन के पीछे फौज सुभट चाले भले॥ दे धोंसा तहां चढ़े जहां चेतन वसे। आये पुर के पास न आगे को धसे॥ ४३॥ चेतन का गढ़ जोर देख सब थर हरे। ठहरे डेरा डाल मोरचा दृढ़ करे॥ जहां

तहां जासूसलगा मग हेरते। निकसे चेतन कहीं अके-
ला घरते ॥ ४४ ॥

॥ दोहा ॥

उत जासूस सु दौड़ के कही जीव से जाय।
क्या बैठे निश्चिन्त हो अरि दल पहुंचो आय ॥ ४५ ॥

॥ सोरठा ॥

सुन के चेतन राय चित चिन्तो कीजे कहा।
लीनो ज्ञान बुलाय कहो मित्र क्या कीजिये ॥ ४६ ॥
तब यों बोलो ज्ञान अब इन से लड़िये सही।
हरिये इन को मान अपनी सेन सजाय के ॥ ४७ ॥

॥ चौपाई ॥

तब चेतन बोले मुख बात। तुम से मेरे शूर बिख्यात ॥
तबसो कोचिन्ताकुछनाहिं। निर्भय राजकरों जगमाहिं ४८
अब तुम फौज करो तयार। शूर बड़े संग लेउ जुझाय ॥
तबहिज्ञानसबशूरबुलाय। कहो हुकमयहचेतनराय॥ ४९ ॥
होउ तयार गहो हथियार। मोह सुभट से कीजे रार ॥
सुनकेशूरखुसीसब भये। दोयघड़ी भीतरसजगये॥ ५० ॥
करो स्थापना ज्ञान वजीर। कैसे सुभट बने वर वीर ॥
तबे ज्ञानदेखीसब सेन। निजनिज नामकहोसबऐन ५१
प्रथम स्वभाव कहें बर बीर। मेरे लगें न रिपु के तीर ॥

औरसुनोमेरीअरदास। क्षणमेंकरोंशत्रु दलनाश ॥ ५२ ॥
तबहि ध्यान बोलो मुख बैन। हुक्म करो जीतों सबसैन ॥
मोआगेअरि योंनशिजाय। रबिऊगतज्यों तिमरपलाय ॥
बोलोचारित्रअतिबलवन्त। क्षणमेंकरिहों अरिकाअन्त ॥
पुनबिबेकबोलोबलशूर। देखतमोहिंनशेंअरिक्रूर ॥ ५४ ॥
तब संवेग कहै सुनज्ञान। अरिकुलअभीकरों घमसाण ॥
तबबोलोउद्यमकरचाव। मैंजीतोंरिपु केगढ़राव ॥ ५५ ॥
यह अरिवपुरोकेतिकबात। नाशों ज्यों तमहनतप्रभात ॥
कहैवचनसंतोषरसाल। मोआगेयेंक्याकंगाल ॥ ५६ ॥
धैर्य बोलो मैं अति शूर। पल मे करोंअरिन को चूर ॥
सत्यकहैमैंसबसे जोर। जीतों बैरी निपटकठोर ॥ ५७ ॥
उपशम कहै अनेक प्रकार। मैं जीतों बैरी सर्दार ॥
दर्शनकहैयेकहीवेर। जीतोंसकलअरिनकोघेर ॥ ५८ ॥
आये दानशीलतप गाजि। नानाबिधि भटआयुधसाजि ॥
कहोंकहांलोंनापअपार। इसबिधिसजेसकलसर्दार ५९ ॥
तबहि ज्ञान चेतनि से कही। सेनभई सबहाजिर सही ॥
चेतनदेखेदृष्टिपसार। उत्तम फौजभई सबत्यार ॥ ६० ॥
अब मेरे निज सूर महन्त। ले आवो मेरे ढिंग सन्त ॥
शक्तिअनन्तलखोंनिजनैन। कहैज्ञानप्रभुयहतुमसैन ६१
अनन्त चतुष्टय आदि अपार। सेना सर्व भई तैयार ॥

जुडेसुभटसबअतिबलवन्त। गखातीकरतनआवेअन्त ६२

॥ दोहा ॥

कहै ज्ञान चेतन सुनो रिस ना कीजो रंच ।
यक बात मो ऊपजी कहों बिना पर पंच ॥ ६३ ॥
कहै जीव सुन ज्ञानवह कैसी उपजी बात ।
तुमतो महा सुबुद्धहो कहिये क्योंसकुचात ॥ ६४ ॥
तबहिं ज्ञान निश्शंकहो कहै जीव से बैन ।
सुभट एकही भेजिये गह लावै सब सैन ॥ ६५ ॥

॥ सोरठा ॥

कहा बिचारा मोह जिस ऊपर तुम चढ़तहो ।
सेवक भेजो सोह जो लावे जीवित पकड़ ॥ ६६ ॥
कहै जीव सुनज्ञान उन घेरो पुर आन के ।
कहो कौन यह श्यान घरमें रहिये बैठकर ॥ ६७ ॥
शूर वीर नहीं मीत अरि आये घर मे रहै ।
हार होउ या जीत जैसी हो तैसी बनै ॥ ६८ ॥
कहै ज्ञान सुन शूर तुम कहते सो सत्य है ।
कहा मोह वह क्रूर तिस ऊपर तुम चढ़त हो ॥ ६९ ॥

॥ पद्धड़ी छन्द ॥

तबकहै जीव तुम सुनोज्ञान। तुम लायक नाहींयह सयान ॥
वहमिथ्यापुरकाहैनरेश । जिनघेरेअपनेसर्वदेश ॥ ७० ॥

जिस के संग शूरा हैं अनेक। अज्ञान भाव सब गहैं टेक॥
मन्त्रीजिसके दो रागद्वैष। क्षणमेंसबसेनाकरेंशेष॥ ७१॥
संशय सो गढ़ जाके अटूट। विभ्रम सी खाई जटा जूट॥
बिषयासी रानीजासग्रेह। सुतताकेशूरकषाय तेह ७२॥
चेनापतिचारेंहैं अनन्त। जिन घेरोअवृत पुर महन्त॥
देशव्रत[illegible]तनदाव्रलीन। स्वार्धनिप्रमत्ताप्रमत्तकीन ७३
इसविधिसे घेरो देश येह। चढ़आई फौजें पड़ीं तेह॥
तामेंनृपआपअनन्तजोर। बलजासनपारावारओर॥७४॥
आयुधजाकेभ्रमचक्रहाथ। बहुआरा जासु उपाधिसाथ॥
मदनागपांसविद्याअनेक। सत्तरकोड़ाकोड़ी सुटेक ७५॥
वाणादिक महाकठोर भाव। जिहि लगतबचेना रंकराव॥
इसविधिअनेकहाथियारधार। तिननामकहतलागेअवार॥
यहमोहमहाबलवन्त भूप। तुमज्ञानसुजानोसबसरूप॥
कैसेयासे होवेबचाव। तुमस्यानेहोचूको नदाव॥ ७७॥

॥ सोरठा॥

तब बोलो या ज्ञान चेतन तुम सांची कही।
यह मेरे उन्मान तुम क्यों जानी बात यह॥ ७८॥
कहै जीव सुन मित्र मैं अपनी बीती कहों।
तुम हो सुबुध पवित्र सुनो बात विस्तार से॥ ७९॥

॥ चौपाई ॥

इसी मोह नृपमोहि भुलाय। कुमति सुता दीनी परनाय ॥
दिनकीयादिमेहिकुछनाहिं। कालअनन्तभयोजगमाहिं ॥
मेरी सुधि बुधिसबहर लई। मोहिनसुरतिरंच कुछभई ॥
इनकीनोंजैसोनरकीश। बिबिधिस्त्रांगनाचोंनिशिदीस ८१
चौरासीलख योनि फिरावे। स्वर्गनर्कफिर फिर उपजावे ॥
क्षणमेमनुजक्षणकतिर्यंच। लखेनजावेंजासुप्रपंच ॥ ८२ ॥
जड़पुरको मुहि कियो नरेश। मैं जानों सब मेरो देश ॥
तबमैंआपाकियोयहसंग। मनमानीअपनेरसरंग ॥ ८३ ॥
जब मैं बसो मोह के ग्रेह। तब मैं जानी सब बिधि येह ॥
कहोंकहांतकसबविस्तार। थोड़ेमेंतुमलेहुबिचार ॥ ८४ ॥

॥ सोरठा ॥

तब बोलियो ज्ञान सार तुम्हारो मैं लहो।
अब तुम सुनो सुजान एक हमारी बीनती ॥ ८५।
सेवक भेजो एक जो जानो बलवन्त है।
रहै तुम्हारी टेक मेरे मन ऐसी जंची ॥ ८६ ॥
कहै जीव सुन ज्ञान बिना विचारे क्यों कहो।
मोह महा बलवान ता की समता को लहै ॥ ८७ ॥

॥ चौपाई ॥

कहै ज्ञान सुन जीव नरेश। तुम समान को और महेश ॥

सुखसमाधिपुरदेशविशाल। अभयनामगढ़ अतिहिरसाल
ता में बसोसदातुम नाथ। निशि दिन राजकरोहितसाथ॥
सुमतिआदिपटरानीसात। सुबुधिक्षमाकरुणाविख्यात॥
निर्जर दोइ धारणा एक। शांति आदि बहु सखी अनेक॥
बांधवजहांधर्म सेधीर। अध्यातमसेसुतबरबीर॥ ९०॥
मित्रसत्यबस वसेंसुपास। निज गुणमहलसदासुखबास॥
ऐसेराज्यकरोतुमईश। सुखअनन्तविलसोजगदीश ९१॥
गुनपरशूर सेन है जोर। तिन को वारापार न ओर॥
तुमअपनेपुरथिरहोरहो। बचनहमारसत्यश्रद्धहो॥ ९२॥
आज्ञा करो एक जन कोइ। सज सेना सो आगे होइ॥
चेतनकहैसुनोवरज्ञान। तुम्हरेंबचनहमेंसुप्रमाण॥ ९३॥
हम आज्ञा यह तुम को करी। लेहु मुहूर्त अति शुभघरी॥
चढ़ोमोहपरसाजिहथियार। शूरबड़ेसबतुम्हरेभार॥९४॥
हमतुममें कुछ अन्तरनाहिं। तुम हम मेंहमहैं तुममाहिं॥
जैसे सूर्यद्युतिकोधरे। तेजसकलसूर्य द्युतिकरे॥ ९५॥
इस विधिहमतुमपरमसनेह। कहतनलहियेगुणकोछेह॥
ज्ञानकहैप्रभुसुनइकबैन। शिक्षामोहिदीजियेऐन॥ ९६॥

॥ जीव उवाच ॥

तुम तोसबविधि हो गुणभरे। परअरिसेकबहूं नहींलरे॥
यासेतुमरहियोहुशियार। युद्धबड़ेअरिसेनिधार॥ ९७॥

॥ बेसरी छंद ॥

ज्ञान कहैबिनती सुन स्वामी। तुम तो सब केअन्तर्यामी ॥
कहाभयोनकरीभैंरारि । अबदेखो मेरातलवारि ॥ ६८ ॥

॥ जीव उवाच ॥

वेसब दुष्टबड़े अपराधी।किसबिधिसेन जाय सबसाधी॥
मेरेमनअचरजयहज्ञान। पुरमैंजानौंतुमबलवान ॥ ६९ ॥

॥ दोहा ॥

ज्ञान कहै चेतन सुनो । तुम से मेरे नाथ ।
कहा बिचारो मोह यह गह लावौं इक हाथ ॥१००॥
तब चेतन ऐसे कही जीत तुम्हारी होइ ।
मारि भगावो मोह को राग द्वेष अरिदोइ ॥१०१॥

॥ करखा छंद ॥

चढ़ोज्ञानगंभीरसंगलेयबरबीर येकसेयेकसबसरसशूरा। कोटिअरु संख्यना पारकोकोगिनेग्यानके भेददलसबल पूरा।सिपह सालार सर्दारभये भेदत्रयअरिन्नदल चूरयह बिरद लीनो । हाथहथियार गुणधार बिस्तारबहु पहिन दृढ़भाव यह जिरहकीनो ॥ १०२ ॥ चढ़तसब बीरमन धीर असवारधौं देख अरि दलन को मान भंजे । पेख जयवंत जिमि चंद्र रुबही कहैं आज पर दलन को शाह गंजे । अतिही आनन्द भर बीर गण कहत सब आज

हम भिड़न को दाव पायो। युद्ध ऐसा करै देख अरि
थर हरें होय हम नाम दिन दिन सवायो॥ १०३॥

॥ मरहटा छंद॥

बाजें रण तूरे दल बहु पूरे चेतन गुण गावें।
सूरंतनजागो आलसभागो अरिदलपैधावें॥
ऐसे सब शूरेज्ञान अंकूरे आये सन्मुख जेह।
आपाबलमंडेअरिदलखंडें करेंनममतादेह॥१०४॥

॥ दोहा॥

तब विवेक बर दूत को लीनो ज्ञान बुलाय।
जाय कहो या मोह से भलो चहै तो जाय॥१०५॥
जो कब हूं टेढ़ो बके तो तुम दीजो धौंस।
धिक् धिक् है तो जन्म को लड़ जो राखे हौंस॥१०६॥
तेरा बल जेता चले तेता कर तू जोर।
ये चाकर सब जीव के छण में कर हैं भोर॥१०७॥
ज्ञान भलाई जात्त के मैं पठयो तुम पास।
चेतन का पुर छोड़ दे जो जीवन की आस॥१०८॥

॥ सोरठा॥

चलो विवेक कुमार आयो राजा मोह पर।
कहो बचन विस्तार नीको चाहो भाजियो॥१०९॥
सुन के बचन सुतास कोपो मोह महा बली।

क्षण में करहों नाश मो आगे तुम हो कहा ॥११०॥

॥ दोहा ॥

बोलो ज्ञानावरण ने तुम सब कीने जेर ।
इतनी लाज न आवती मुख दिखलायो फेर ॥१११॥
काल अनन्त कहां रहे सो कुछ करो विचार ।
अब ऐसी कुव्वत भई लड़ने को तैयार ॥११२॥
चौरासी लख योनि में को नाचत है नाच ।
वा दिन पुरुषार्थ गयो मोहि कहो तुम सांच ॥११३॥
इतने दिन लों पाल के मैं तुम कीने पुष्ट ।
ताते लड़वे को भये महा कृतघ्नी दुष्ट ॥११४॥
जाहु जाहु पापी सबे चेतन में गुण एह ।
मो को मुख न दिखाउ तू क्षण में करहों खेह ॥११५॥
मोह वचन ऐसे कहे सुन के चलो विवेक ।
आयो झट पट ज्ञान पर कही बात यह एक ॥११६॥
वह क्योंही भागे नहीं गह बैठो है टेक ।
लड़ है फौज सु जोर के बोलो बचन विवेक ॥११७॥
दूत बचन सुन के हंसो ज्ञान बली मन माहिं ।
देखो थिति पूरी भई तोहू मानत नाहिं ॥११८॥
लेहु सुभट तुम वेग दे अव्रतपुर अभिराम ।
रहो क्रूर यह घेर के मैंटो वाको नाम ॥११९॥

चढ़ी सेन सब ज्ञान की शूर वीर बलवन्त।
आगे सेनानी भयो महा विवेक महन्त॥१२०॥

॥ करखा छंद ॥

आय सन्मुख भयो मोह की फौज से भिड़न को मंत्र सब शूर माड़े। देख तब मोह अति क्रोध मन में कियो शूर हलकार के आप ठाड़े॥ शूर बलबन्त मदमत्त मह मोह के निकर के सेन से अग्र आये। मार घमसान वहु युद्ध अति रुद्धकर एक से एक भिड़ते सवाये ॥ १२१ ॥ वीर विवेक ने धनुष ले ध्यान का मार के सुभट सातो गिराये। कुमक जो ज्ञान की सेन सब संग धस मोह के सुभट मूर्छा समाये॥ देख यह युद्ध शठ मोह भागो तहां आय व्रत देश पुर शूर जोरे। बांध कै मोरचे ब- हुरि सन्मुख भयो लड़न की हांस न करेनिहोरे ॥ १२२॥

॥ चौपाई ॥

इस विधि मोह जोड़ सब सैन। देश व्रत पुर बैठो ऐन॥
करेसोचनानांसुप्रकार। किसविधिकोअव्रतपुरसार१२३॥
सुभटसात तिनको दुःखकरे। तिन बिनआज निकसकोलरे
जोहांते वेशूरप्रधान। तोलेते अव्रत पुरथान॥ १२४॥
ऐसे बचन मोह नृप कहे। राग द्वैष तब अति उर दहे॥
हाहाप्रभुऐसाक्योंकहो। एकसलाह हमारीगहो॥१२५॥

सुभट तुम्हारे वहु बल वीर। तिन मे जानो साहस धीर॥
तिनको आज्ञाप्रभुजीदेहु। इसविधिअव्रतपुरलेलेहु१२६॥
तबहि मोह नृप वीड़ा धरे। कौन सुभट आगे हो लरे॥
बोलोंतहांअप्रत्यारूयान। मैंजीतोंअबकेदलज्ञान॥१२७॥
कहै मोह नृप किस विधि वीर। मोहि बतावो साहस धीर॥
कहैअप्रत्यारुयानहुलास। सुनियेप्रभुमेरीअरदास१२८॥
मैं अव्रत पुर क्षण में जाउं। चेतन ज्ञान बसें जिस ठांउं॥
संगलेयसबअपनेलोग। नानाभांतिप्रकाशोंभोग १२६॥
उन के उपशम बेदकभाव। क्षयोपशम वसुभेद लखाव॥
इनकीथिरताबहुक्षणनाहिं। क्षणसम्यकक्षणमिथ्यामाहिं॥
क्षायक एक वली है जोइ। पहिले प्रगट नहीं सो होइ॥
तोलो देखोंमैंक्याकरों। व्रतकेभावसर्वथाहरों॥ १३१॥
अवत में उपशम रहिजाय। पापपुण्यतब जीव कराय॥
जबवहमग्नहोइइसरंग। जीतिलेंउतवहींसवैंग॥ १३२॥
इस बिधि जीतों अरिदलजाय। जो मैं आज्ञा पाऊंराय॥
तबेमोहनृपचिन्तेसही। यहतोबातभलीइनकही॥१३३॥
करो सिद्धि अप्रत्यारुयान। लेउ शूर जो अति वलवान॥
इसविधिआयोपुरकेमाहिं। ज्ञानबिनाकोईजानेनाहिं १३४
निज विद्या सुप्रकाशे सही। नाना बिधि क्रोधादिक कही॥
ताकेभेदअनेकअपार। कहँलोंकहियेअतिबिस्तार १३५॥

॥ दोहा ॥

इसविधिसबही फौज ले चढ़ो अप्रत्याख्यान।
देश व्रत में बैठ के करे व्रतों की हान॥१३६॥
ताके पीछे मोह नृप आयो सब दल जोर।
महा सुभट संग शूर ले चढ़ो सु मूंछ मरोर॥१३७॥
कुमति जु सबल बुलायके मोह कही यह बात।
तुम सुधि लावो बेगही कहां सुभट वे सात॥१३८॥
कुमति खबर पल में दई वे मूर्छित उन पास।
कुछ विद्या कीजियहां जो वे लहैं प्रकाश॥१३९॥
मोह कहै विद्या बिविधि राग द्वैष ले संग।
उन में कुछ मूर्छित रहैं कुछ कुछ जीवित अंग॥१४०॥
सुमति जाय यह ज्ञान से कही मोह की बात।
कहा रहे तुम बठ के सुभट मूर्छित सात॥१४१॥
जो ये सात जियें कहूं तो हो अति उत्पात।
चेतन के सब भटन को करहैं छण में घात॥१४२॥
मोह जु फौजें जोड़ के आयो कर अभिमान।
तुम भी अपने नाथ को खबर पठावो ज्ञान॥१४३॥
तबे ज्ञान निज नाथ पर भेजो सम्यक बेग।
कही बधाई जीत की मेटन को उद्वेग॥१४४॥
फेर मिले ये दुष्ट सब आए पुर के माहिं।

लड़बे की मन्सा करें भागन की बुधि नाहिं ॥१४५॥
यह सब सम्यक भाव तब कही जीवसे जाय ।
सुन के प्रवल प्रचंड हो चढ़ो सुचेतन राय ॥१४६॥
महा सुभटबलवन्त अति चढ़ो कटकदल जोर ।
गुण अनन्त सब संग ले कर्म दहन की ओर ॥१४७॥
आय मिले सब ज्ञान को कीनो एक विचार ।
अब के युद्ध करो प्रवल फिर ना बचे गमार ॥१४८॥
चढ़े सुभट सब युद्ध को शूर वीर बलवन्त ।
आये अन्तर्भूमि में चेतन सुभट अनन्त ॥१४९॥

॥ सोरठा ॥

रोपि महा रणथंभ चेतन धर्म सुध्यान को ।
देखत लगहि अचंभ मनहु मोह की फौज को ॥१५०॥

॥ दोहा ॥

दोनों दल सन्मुख भये मचो महा संग्राम ।
इत चेतन योद्धा बली उते मोह बल धाम ॥१५१॥

॥ करखा छंद ॥

मोह की फौज से बाण गोले चलें जीव के कटक में आय लागे । अष्ट मल दोष सम्यक्त्व के जो कहे तेही अव्रत पुरहि मोह दागे ॥ जीव की फौज से प्रवल गोले चले मोह के सुभट तिन आय मारे । अस्त्र वैराग्यता भाव बहु भांति के शत्रु के दमन को ज्ञान धारे ॥ १५२ ॥

तबहि फिर जोर कर अतिहि घन घोर कर मोह नृप चंड वाण चलावे। दोष अनायतन अतिही उपजाय घन जीव की फौज सन्मुख बगावे॥ हन्स की फौज से वाण घमसान के गाजते बाजते चले गाढ़े। मोह की फौज को मार घमसान कर हेयोपादेय के भाव काढ़े॥ १५३॥ अष्ट मद गजन के यूथ आगे किये मोह के सुभट सब धसतसूरे। एक से एक योद्धा महा भिड़त हैं अतिहि बलवन्त मदमत्त पूरे॥ जीव की फौज से सत्य सु प्रतीति के गजन के यूथ बहु निकस माते। मार कर मोह की फौज को पलक में करत घमसान सो अन्त आते॥ ॥ १५४॥ समर गाढ़ो मचो सुभट एक न बचो चोट बिन खाय दुहू दलन माहीं। एक से एक योद्धा उभय दलन में कहत उपमा कछू बनत नाहीं॥ सात जो सुभट मूर्छित भये थे प्रथम मोह ने यत्न कर सब जिवाये। आय तिन युद्ध में क्रुद्ध हो जीव के जीति के सुभट पीछे हटाये॥ १५५॥ मिश्र सास्वादन स्पर्शि मिथ्यात्व भट उमगि के बहुरि अवतहि आये। मार चापट करे मोह के भट सबे सात में कोई बचने न पाये॥ भये मूर्छित सबै मरो एकहु नहीं जीव ने भेद यह नाहिं जानों। बिजय अपनी भई जान यह जीव ने अधिक आनन्द मन माहिं मानो॥ १५६॥

॥ सोरठा ॥

इस विधि चेतन राय युद्ध करे अति मोह से।
और सुनो अधिकाय समर महा जो होयगा ॥१५७॥

॥ मरहटा छंद ॥

रणबाजे वज्जहिं सुभट सुगज्जहिं करें महा अति युद्ध ।
इत जीव हंकारे निज परिवारे होइ अरिन पर क्रुद्ध ॥
उत मोह चलावै सब दल धावै चेतन पकड़ौ आज ।
इसविधिदोनोंदलकलनाहीं पलकरैंअनेकइलाज१५८॥

॥ चौपाई ॥

मोह सराग भाव के बाण । मारे विविधि जीव के तान ॥
आतमवीतरागताध्याय।मारेशरशुभचापचढ़ाय ॥१५९॥
तवहि मोह नृप खड्ग प्रहार । मारे पाप पुण्य दो धार ॥
हन्सशुद्धबेदे निजरूप। यही खड्गमारेअरिभूप॥ १६० ॥
मोह चक्र ले आर्तिध्यान । मारे चेतन के पहिचान ॥
जीवसुधर्मध्यानकीओट । आपबचायकरेपरचोट॥१६१॥
मोह रौद्र बर्छी कर लेय । चेतन सन्मुख घाव सुदेय ॥
हन्सदयालुभावकीढाल।आपबचायकरेपरकाल ॥१६२॥
मोह लिये अविवेक सुदंड । करने चेतन को शत खंड ॥
चेतन ले यमधरसुविवेक।मारहरैबैरिनकीटेक ॥ १६३॥
चेतन ले क्षयोपशमबाण । बैरिन मार करै घमस्यान ॥

अप्रत्यारुयानसुमूर्छितभयो। तबेमोहपाछेहटगयो १६४॥
जीतो चेयन भयो अनन्द। बाजें शुभ बाजे सुख कन्द॥
मिलेसुदेशव्रतकेलोग। दर्शनप्रतिमाआदिसंयोग १६५॥
दर्शन पहिली फिर व्रत जान। सामायक तीजी पहिचान॥
प्रोषधव्रतचौथीवलवन्त। त्यागसचित्तपंचमीसन्त १६६॥
छटवींनिशि आहार सुत्याग। सप्तम ब्रह्मचर्य वड़भाग॥
अष्टमपापारंभनिवार। नवमप्रमाणपरिग्रहसार॥१६७॥
किंचित त्यागी परम प्रधान। महा सुबुध गुण रत्न निधान॥
दशवींपापरहितउपदेश। एकादशमभवनतजदेश १६८॥
प्राशुक लेय असन शुचि जैन। उदंड बिहारी कहिये ऐन॥
येएकादश वीरअनूप। आयमिलेश्रावककेरूप॥ १६९॥
चेतन सब से किया जुहार। परम धर्म धन धारण हार॥
निजदलहन्सको आनन्द। परमदयालमहासुखकन्द १७०

॥ दोहा ॥

इस बिधि चेतन जीत के देश व्रत पुर माहिं।
आज्ञा श्री जिन देव की चलत बिरोधे नाहिं॥१७१॥
जिसजिसथानककाजजोकीने सबबिधिआय।
अब भावे वैराग्यता सुनो भविक मनलाय॥१७२॥

(दोहा मिश्रित प्राणीरे यह चालि)

पंच महाव्रत मनधरो सुन प्राणीरे। छोड़ ग्रहस्था

आज सुन प्राणीरे ॥ मुनि होने को उमगियो सुन प्राणीरे। धारी शिव की आश आज सुन प्राणीरे ॥ १७३ ॥ जो मिथ्यात्व दशा विषे सुन प्राणीरे। कीने पाप अनेक आज सुन प्राणीरे ॥ ज्ञान तनक तो को नहीं सुन प्राणीरे। राग द्वैष अविवेक आज सुन प्राणीरे ॥ १७४ ॥ सो दुःख तो को देत हैं सुन प्राणीरे। चूको ना अब दाव आज सुन प्राणीरे ॥ ते अव्रत में बहु किये सुन प्राणीरे। पाप सो कर पछताव आज सुन प्राणीरे ॥ १७५ ॥ देश व्रत में पंच जो सुन प्राणीरे। थावर घात कराय आज सुन प्राणीरे ॥ पाप कर्म कीने घने सुन प्राणीरे। बिन भुगते ना जाय आज सुन प्राणीरे ॥ १७६ ॥ मोह महा तूने कियो सुन प्राणीरें। सो तो को दुःख देय आज सुन प्राणीरे॥इस से मोह निवारिये सुन प्राणीरे। तो अविक-ल सुख लेय आज सुन प्राणीरे ॥ १७७ ॥ मन बच तन के योग से सुन प्राणीरे। कीने हैं जो पाप आज सुन प्राणीरे ॥ सो भुगते बिन क्यों मिटे सुन प्राणीरे। जो बांधे विधि आप आज सुन प्राणीरे ॥ १७८ ॥ जो तू संयम आदरे सुन प्राणीरे। तप को बन में जाय आज सुन प्राणीरे ॥ तो सब कर्म नशाय के सुन प्राणीरे। परमान-न्द लहाय आज सुन प्राणीरे ॥ १७९ ॥ पूर्व बांधे कर्म

जो सुन प्राणीरे। क्षण में सो क्षय जाय आज सुन प्राणीरे॥ इस बिधि भावना भावते सुन प्राणीरे। विराग प्रगटो आय आज सुन प्राणीरे॥ १८० ॥ जीव शुद्ध संयम लियो सुन प्राणीरे। अब कैसी विधि होय आज सुन आतम ने संयम लियो सुन प्राणीरे। मोह छुडावै सोइ आज सुन प्राणीरे॥ १८१ ॥ मोह सर्व दल साज के सुन प्राणीरे। बैठो द्वारा रोंक आज सुनप्राणीरे॥ विघ्नकरे बहु भांति के सुन प्राणीरे। आराति भय यत शोक आज सुन प्राणीरे॥ १८२॥

॥ दाहा ॥

बहु भट प्रत्याख्यान के कर के आगे बाण।
बठा बाटहि रोक के मोह महा बलवान॥१८३॥
कई सु चाकर जोड़ के व्रत पुर दये लुकाय।
चेतन के सो कटक में घूमें भेष वनाय॥१८४॥
कभी कि प्रगटहि होइ कुछ कभी कि रहै लुकाय।
इस विधि सेना मोह की छिपी सु पुर में आय॥१८५॥

॥ चौपाई ॥

मोह सकल दल सह परिवार। आय लगे सबरे सर्दार॥
चेतनबैठोव्रतपुर माहिं। आगेपांवधरतसोनाहिं॥१८६॥
मोह करे सु प्रपंच अनेक। पकड़न को गहि बैठो टेक॥

जोचेतननिकसेपुरमाहिं। तोराखोंगहिकेदृढ़वांह ॥१८७॥
बहुरननिकसनत्तण इकदेउ। डालमिथ्यात्ववैरनिजलेउ ॥
तवचेतनमुभ्कसेरणकरे। जो आवेअवकेकरतरे ॥१८८॥
तो फिर याको ऐसाकरें। सुधि वुधिशक्तिसर्व तिसहरों ॥
इसबिधिमोहदगाकीवात। करनेचहैजीवकोघात॥१८९॥
सुमति खबर चेतन को दई। एक बात प्रभु सुनिये नई ॥
मोहरचेफन्दाबहुजाल। तुममतभूलोदीनदयाल ॥१९०॥
अब के जोपकड़ेवह तोहि। तो फिर दोष नदीजो मोहि ॥
मैंसवखबरतुम्हें प्रभुदई। जैसीकछूहकीकतभई ॥१९१॥
तबे जीव व्रत पुर को पन्थ। चलो उमंगि भयो निर्गंथ ॥
प्रमत्तपुरकीलीनीराह। शीघ्रचलोमनधरउत्साह ॥१९२॥
रोको आकर प्रत्याख्यान। युद्ध किये बिन देय न जान ॥
चेतन कहैजाहुशठदूर। त्तणमेंमारकरों चकचूर ॥१९३॥
प्रत्याख्यान जोर बहु करो। चेतन सन्मुख होकर लरो ॥
चेतनध्यानधनुषकरलेय।मूर्छितकरआगेपददेय ॥१९४॥
गिरो सु प्रत्याख्यान कुमार। चेतन पहुंचो षष्टम द्वार ॥
मोहकहै देखोइस जोर। यहतो करेजात है भोर ॥१९५॥
पकड़ो सुभट दौड़ के याहि। लावो पकड़ बेग दे ताहि ॥
चलोअधर्मरागवलवीर।विकथाबचनदूसरोधीर॥१९६॥
निद्रा विषय चले पंचपंच। पकड़ लिआये ठान प्रपंच ॥

चेतन देखोयहक्याभई। मोहिपकड़लेआयेदई ॥१९७॥
यही प्रमत्त नगर है सही। मुझ से सुमति प्रथमही कही ॥
अवकुछकीजेऐसाकाज। यासे होप्रमत्तपुरराज ॥१९८॥
अट्ठाईस मूलगुण धरै। बारह भांति तपस्या करै॥
सहैंपरीषहबासिरुदोइ। निर्भयमुनिव्रतयासेहोइ ॥१९९॥
प्रमत्त पुर इम जीव रहाय। तबे मोह निज दास पठाय॥
पकड़मंगावोकरबहुमान। तबेहंसचिन्तोनिजज्ञान॥२००॥
यहां मोह कर है बहु जोर। मो को रहन न देहैं चोर॥
अबयाकोमैंभार्मितकरों। अप्रमत्तमेतबपदधरों ॥ २०१ ॥
तबे हन्सथिरताअभ्यास। ध्यानअग्निका कियाप्रकाश॥
मोह शक्तिजालीकरचाव। मंहासुदृढ़करानिर्मलभाव२०२
लियोहन्सनिज बल सुप्रकाश। कीन्हाअप्रमत्तपुरबास॥
सुभटसुतीनमोहकेटरे। औरप्रमादसर्बपरिहरे॥ २०३ ॥
तजेअहार बिहार बिलास। प्रथम करण कीनाअभ्यास॥
सप्तमपुरकेअन्तअनूप। करणचरणआचारस्वरूप२०४
आवेसंग मोह दल घोर। पर कुछ ताको चले न जोर॥
चेतनअष्टमपुरपदधरो। पाछेमोहगुप्तअनुसरो ॥२०५॥
करे करण चेतन इस ठाम। दूजो करण अपूर्व नाम॥
कबहूजोनभयेपरणाम। सोअबप्रगटेअष्टमठाम॥२०६॥
पुनः जीव पुर नवम लहाय। जा में थिरता बहुत कराय॥

पूर्व भावचलतजोसही। तिनइसपुरस्थिरताल्लही ॥२०७॥
इसविधि करण तीसरो करे। तबहि मोह मन चिन्ता धरे ॥
यह तोजीततसबपुरजाय। मेराकुछनाजोरबसाय॥२०८॥

॥ दोहा ॥

मोह सैन सब जोड़ के कीना येक विचार ।
प्रगट भये बनिहैं नहीं यह डारेगा मारि ॥ २०९ ॥
यासे तुम सब गुप्त हो रहो पुरों के माहिं ।
जो कहूं आवे दाव में तो तुम तजियो नाहिं ॥२१०॥
हम भी शक्ति छिपाय के रहैं अगाड़ी जाय ।
जो जीवत बचिहैं सही तुम्हें मिलेंगे आय ॥२११॥
नगर नाम उपशान्त पुर तहां तलक मोजोर ।
जो आवे मो दाव में तो हों करहों भोर ॥ २१२॥
तुमभीसबमिल दौड़केतुरत सुमिलियोआय ।
तब या हंसहि पकड़ के देहैं भली सजाय ॥२१३॥
यह विचार सब सेनसे कीना मोह नरेश ।
रहेगुप्त दबि दबि सबै कर कर उपशमवेश ॥२१४॥

॥ चौपाई ॥

चेतन सोध लिया चहुंओर । पकड़े मूढ़ मोह के चोर ।
भट छत्तीसगहे तत्काल। मूर्छित कीने दीनदयाल ॥२१५॥
सूक्ष्म साम्परायके देश । आय कियो चेतन सु प्रवेश ॥

तिसथानकऋजुलोभकुमार।मूर्छितकरजीतोवलधार२१६
आगे पांव निशंकित धरे। अब बैरी नाहीं सो लरे॥
मैं जीते सब कर्मकठोर। इस विधिहोनिश्शंकित जोर२१७
जो उपशान्त मोहको देश। तामें कियो निश्शंक प्रवेश॥
तबहींमोह जोरअतिकरो। चेतनपकड़ो हल्लाकरो २१८॥
आये सुभट मोह के दौर। मूर्छित छिप बैठे थे ठौर॥
पकड़हन्समिथ्यापुरमाहिं। लायेंसबमिलहासकराहिं२१९
यहांकछू निश्चयनहींबात। थितिअनंतसागरविख्यात॥
औरहू थानकहैंवहुजहां। नानाविधिस्थितिहैतहां॥२२०॥
उपशम सम्यक जाकेहोय। मिथ्यापुरलों आवै सोय॥
क्षायकसम्यकवन्तकदाचि। उपशमश्रेणिचढ़ेजोराचि॥
औरहु थानक ऊपर गहै। तोऊ सम्यक बल जो रहै॥
मोहबलीचेतनकोलेय। अब मिथ्यापुरमें दुखदेय॥२२२॥
नाना बिधिशंकटअज्ञान। सहै कष्ट बहु मिथ्या थान॥
पंचमिथ्यात्वभेदाविस्तार। कहतनसुरगुरुपावैंपार॥२२३॥
सादि मिथ्यात्वनामजियलहै। ताकेउदयकौनदुःखसहै॥
सोदुःखजाने चेतनराम। या जानेकेवलगुणधाम॥२२४॥
कहत न लहियेताकापार। दुःख समुद्रसम अगम अपार॥
इसविधिसहीकर्मकीमार। पुनःहन्सकुळकरीसम्हार २२५
द्रव्य सु क्षेत्रकाल भवभाव। पांचों मिले बराबर दाव॥

काललब्धिप्रगटीहैआय। अबकुछकीजेआपउपाय२२६

॥ दोहा ॥

ध्यान सु दृढ़तर राखके, मन में कियो विचार।
इनकी संगति त्यागिये, अब स्थिर हो यार ॥२२७॥

॥ दोहा मिश्रित भाईरे की ढाल ॥

माया मृषा ।निदान ये सुन भाईरे।तीनों शल्य निवार चेत मन भाईरे ॥ क्रोधमान माया तजो सुन भाईरे। लोभ करो परिहार चेत मन भाईरे ॥ २२८ ॥ झूठी यह सब सम्पदा सुन भाईरे। झूठा सब परिवार चेत मन भाईरे ॥ मिथ्या काया कामिनी सुन भाईरे। मिथ्या इन का प्यार चेत मन भाईरे ॥ २२९ ॥ ये क्षण में उपजें नशें सुन भाईरे। तू अविनाशी राम चेत मन भाईरे ॥ काल अनन्तः दुःखदयो सुनभाईरे। मोहमहा दुःखधाम चेत मन भाईरे॥२३०॥ सात नर्क में तू परो सुन भाईरे। वार अनन्तः जाय चेत मन भाईरे॥ तहां वेदना जो सही सुन भाईरे। सो जानें जिनराय चेत मन भाईरे ॥२३१॥ तूने या सन्सार में सुन भाईरे। सेये विषय कषाय चेत मन भाईरे ॥ तिन वश पड़ो निगोद में सुन भाईरे। सो दुःख कहो न जाय चेत मन भाईरे ॥ २३२ ॥ बार अ-ठारह श्वास में सुन भाईरे। कीना जन्मन मरण चेत

सुन भाईरे ॥ ज्ञान शक्ति अपनी दवी सुन भाईरे। रोकी ज्ञानावरण चेत सुन भाईरे ॥ २३३ ॥ देव आयु कबहूं धरी सुन भाईरे। भवन त्रक में जाय चेत मन भाईरे ॥ लोभ महा दुःख है जहां सुन भाईरे। विषयन का अधिकाय चेत मन भाईरे ॥ २३४ ॥ दुःख जहां बहु मानसी सुनभाईरे। देखें अन्य विभूति चेत मन भाईरे ॥ तिर्यंच गति में तू भ्रमो सुन भाईरे। शंकट सहो अकूत चेत मनभाईरे ॥ २३५ ॥ अविवेकी कारज किये सुन भाईरे। बांधे पाप बिख्यात चेत मन भाईरे ॥ नर देही भी पाय के सुन भाईरे सेये पंच मिथ्यात्य चेत सुन भाईरे ॥ ॥ २३६ ॥ निज कार्य कुछ ना करो सुन भाईरे। जन्म गमायो आप चेत मनभाईरे ॥ भ्रमो वहुत संसारमें सुन भाईरे। पायो बहु आताप चेतमन भाईरे ॥ २३७ ॥ अब के कुछ तो कों भईसुन भाईरे। जोआत्म सु प्रतीति चेत मन भाईरे ॥ ग्रहण करो निज सम्पदा सुन भाईरे। रत्न त्रय धर प्रीति चेत मन भाईरे ॥ २३८ ॥ और सर्व भ्रम जाल हैं सुन भाईरे। करो तत्व श्रद्धाण चेत मन भाईरे। सुख अनन्त आगे मिले सुन भाईरे। हो आतम कल्याण चेत मन भाईरे ॥ २३९ ॥ सिद्ध समान सुअन्दहो सुन भाईरे। निश्चय दृष्टि निहार चेत मन भाईरे ॥ इसविधि

आतम सम्पदा सुन भाईरे । लेकर आप सम्हार चेत मन भाईरे ॥ २४० ॥

॥ दोहा ॥

इस विधि भाव सु भावते पायो परमानन्द ।
सम्यग्दर्शन दृढ़भयो शिवदाता सुखकन्द ॥२४१॥
चायकभाव प्रगटभये महासुभट बलवन्त ।
कीनो जिनक्षण एकमें सुभट सातका अन्त ॥२४२॥
मोहमहा निर्वलभयो अबकी कुछविपरीति ।
सबही सुभटशिथिल भये धारीमनमें भीति॥२४३॥
चेतन ध्यान कमानले मारो व्यापकबाण ।
मोहमूढ छिपतो फिरे जीवं करे घमसान ॥२४४॥
देशव्रतपुर पर चढ़ो चेतन सबल प्रचंड ।
आज्ञा श्री जिनदेवकी पालेसदा अखंड ॥२४५॥

॥ सोरठा ॥

मोह भयो बल हीन छिपो छिपो नित प्रतिरहै ।
चेतन महा प्रवीण साव धान हो चलत अब ॥२४६॥
तहां अप्रत्याख्यान चार सुभट चण में हते ।
देश व्रत पुर थान कीना निजअधिकार में ॥ २४७॥
फिर प्रमत्त पुर घेर फाटक तोड़ो यत्न से ।
चार सुभट तहां हेर मारे प्रत्याख्यान के ॥२४८॥

अप्रमत्त पुर थान चेतन आयो दल सहित।
जहां मोह हैरान भयो तजो सन्मुख समर॥२४६॥
चेतनकर तहां ध्यान सुभट तीन क्षण में हने।
फिर चारित्र प्रमाण प्रथम करण कीना तहां॥२५०॥

॥ दोहा ॥

तज आहार विहार विधि आसन दृढ़ ठहराय।
क्षण क्षण सुख थिरता बढ़े यों भाषें जिनराय २५१॥
फेर अपूर्व करण में आयो चेतन राय।
कियो करण दूजो तहां थिरता अधिक लहाय॥२५२॥
क्षायक श्रेणी अब चढ़ो उपशम श्रेणी त्याग।
सुमति देख तब यों कहैधन्य हन्स वड़ भाग॥२५३॥
नवमे पुरमें जाय फिर तृतियकरण सुकरेय।
हने सुभट छत्तिस तहां फिर आगे पद देय॥२५४॥
आयो सूक्ष्म लोभ पुर चेतन अधिक सचेत।
सूक्ष्म लोभभट तहांहनोफिर आगे पद देत॥२५५॥
ज्ञान कहै तब नाथ सुन हो सचेत इसठौर।
मोह छिपो बैठो यहां दगाकरेगा और॥२५६॥
प्रथम दगा इतही भयो वही थान यह आय।
या से मैं बिनती करों करखल दलन उपाय॥२५७॥
कहे जीव हे ज्ञान सुन इस पथ पांव न देउं।

चालों दृष्टि निहारके पथ द्वादश पुरलेउं ॥२५८॥
लखो मोह दबको तहां मारो अवसर पाय।
क्षीण मोह पुर में थमो कारज सिद्धिकराय॥२५९॥
ज्ञान दर्शनावरण अरु अन्तराय भट सर्व।
नाश किये क्षण एक में नशो शेष विधि गर्व॥२६०॥

॥ पद्धड़ी छंद ॥

कर मोह महा भट को निपात। चारित्र लयो तहां यथा ख्यात॥ अरु अनन्त दर्शन ज्ञान वीर्य। सुख चारों पाये धार धीर्य॥ २६१ ॥ सर्वज्ञ तीर्थपद विभव लीन। यो सुभट तिरेसठ नाश कीन॥ इम घाति कर्म चारों विनाशि। सब लोक अलोक कियो प्रकाश॥ २६२ ॥ तहां अनन्त दर्शन के प्रताप। त्रैलोक पदार्थ लखे आप॥ भयो अनन्त ज्ञान प्रकाश वान। तब जानंपनो भयो महान॥ २६३ ॥ जाने त्रिकाल वर्ती पर्याय। सब द्रव्यों के जो लोकथाय॥ क्रम रहित एकही समय माहिं। देखें जानें कुछ बचो नाहिं॥ २६४ ॥ यों बल अनन्त पायो अनूप। या से सुख लहो अनन्त रूप॥ तहां दोष अठारह गये भाज। तहां करन लगे त्रैलोक राज॥ २६५ ॥ सुर नर पशु पति सब भये दास। को महिमा सब कहि सके तास॥ गुण थान सयोग सु त्रा-

जमान। शुभ समोशरण उपमा निधान॥ २६६॥ बर प्रातिहार्य महिमा अनूप। दिव्यध्वनि हो आनन्द रूप। भव्यनि हित करत विहार नाथ। भ्रम तिमर हरत वर विभव साथ॥ २६७॥ जिन बचन श्रवण कर भव्य जीव। बहु तरे तरत तरहैं सदीव॥ वर शुक्ल ध्यान का यह प्रभाव। हति कर्म शत्रु भये त्रिजगराव॥ २६८॥ विधि चार अघातिय रहे शेष। तिन में ना शक्ति रही विशेष॥ तो भी जब तक हों नष्ट नाहिं। चेतन ठहरे संसार माहिं॥ २६९॥ शिव थल ना जाने देत क्रूर। जब तक नशि के ना होत चूर॥ यद्यपि शुचि ध्यानारूढ़ जीव। अंतरिक्ष गमन करता सदीव॥ २७०॥ अति दृढ़ आसन ठहराय एक। पद्मासन कायोत्सर्ग टेक॥ प्रभु डिगाहिं न भजहिं कदापि घूम। तो भी बिधि करते महा धूम॥ २७१॥ लेलेय फिरत भुव लोक माहिं। शिव थानक देते जान नाहिं॥ कहूं राखें थिर कहूं ले चलंत। कहूं मौन कहूं वाणी खिरंत॥ २७२ कहूं समो-शरण कहूं कुटी होइ। यों नाच नचावत सुनो लोइ॥ इस विधि ये चारों करत जोर। जाने न देत शिव बधू ओर॥ २७३॥ येते पर निबल किये बखान। ज्यों जरी जेवरी के समान॥ तऊ समय समय पर आय

आय। चेतन प्रदेश पर गिरत धाय॥ २७४ ॥ प्रभु समय समय तिन करत दूर। पर संग न छोड़त महा ...र ॥ तहां सुभट पचासी रहे अंत। निज निज थानक सो बल करंत ॥ २७५ ॥ चेतन प्रदेश ना घात होय। ताते जग पूज्य जिनेश सोय॥ इस विधि तेरम गुण थान बास। करता चेतन निज गुण प्रकाश॥ २७६ ॥

॥ दोहा ॥

चेतन एम सयोग पुर विलसेबहु विधि राज।
अब अघातिया हरण बिधिठाने एक इलाज॥२७७॥
तज सयोग पुर कोकरे पुरसु अयोग प्रवेश।
लागो कर्महि हरण को तज के योगहि क्लेश॥२७८॥
तबहि वेदना कर्म ने निज रस दीना आय।
सातासाता युग्म में एक लखो जिनराय॥२७९॥
सुभट बहत्तर प्रथम हति तेरह फेर नशाय।
एक समय में ऊर्ध्व चल पहुंचे शिव पुर जाय॥२८०॥
तहांनन्त सुख सास्वता बिलसे चेतनराय।
निराकार निर्मल भयो त्रिभुवन मुकट कहाय॥२८१॥

॥ चौपाई ॥

अविचलधामबसेशिवभूप। अष्टगुणात्मक सिद्धिस्वरूप चरमदेहपरिमाणप्रदेश। किंचितऊनकहेसुजिनेश२८२॥

पुरुषाकार निरंजन नाम। कालअनन्तसुध्रुव विश्राम॥
भयोकदाचितनासुखजोइ।सुखअनन्तविलसेअबसोइ२८३
लोकालोक प्रगटसबभेद।गुणपर्यायसहित बिनखेद॥
ज्ञेयाकारसकलप्रतिभास।लखेसुकररेखासमतास२८४॥
अगुणी हानिवृद्धि परिणवे। चेतनशुद्धस्वभावहि रमे॥
व्ययोत्पादध्रुवलक्षणजास। योंस्थितिसब सिद्धिसुवास॥
जगतिजीतिजिसविरदप्रमाण।पायोशिवगढ़रत्ननिधान॥
गुणअनन्तकोबरणेनाम।इसविधितिष्टे आतमराम २८६
जिन प्रतिमा जगदेखोजोय। सिद्धनिशानी देखोसोय॥
सिद्धसमाननिहारोआप। यासेमिटेसकलसंताप॥२८७॥
निश्चय दृष्टिदेख घटनाहिं। सिद्धरुतोहिभेदकुछनाहिं॥
येसब कर्मकहे जड़अंग। तू भैया चेतनसर्वंग॥२८८॥
ज्ञानदरश चारित्रभंडार। तू शिवनायक तू शिवसार॥
तू सबकर्मजीतिशिवहोइ। तेरीमहिमावरणेकोइ॥२८९॥

॥ दोहा ॥

गुण अनंतयाहन्सके किसविधि करोंबखान।
थोड़े में कुछ बरणये भव्य लेहु पहिचान॥२९०॥
यहजिनवाणीउदधिसम कबिमतिअंजुलिमात्र।
तेतीही कुछ पायहै जे तो हो निज पात्र॥२९१॥
जिनवाणी जिनजियलखी आनी निजघटमाहिं।

तिनप्राणी शिवसुखलहो यामेंमिथ्या नाहिं ॥२६२॥
चेतनअरुयह कर्मका कहो चरित्र प्रकाश ।
सुने परम सुख पाइये कहैं भगवतीदास ॥ २६३॥
सत्रहसौ छत्तीस के जेष्ठ सप्तमा आदि ।
श्रीगुरुबार सुहावनो रचना कही अनादि ॥ २६४॥

॥ इति श्रीचेतनचरित्र भगवतीदासकृत सम्पूर्ण ॥

॥ विज्ञापन ॥

(१) जो भाई ॥=) के भीतर जैन पुस्तकें मगावें वे कीमत भर की टिकट भेज देवें महसूल की टिकट हम अपनी ओर से लगा देवेंगे

(२) ॥=) की वा इमसे ऊपर की पुस्तकें वेल्यू पेविल भेजेंगे और २) तककी मगाने वालोंको खर्चा टिकट पाकट और फीस मनीआर्डर माफ रहेगा

(३) इस से अधिक मगाने वालों को खर्चा माफ के उपरान्त कुछ कमीशन भी मिलेगा अर्थात जो जैसा अधिक मगावेंगे वे वैसाही अधिक कमीशन पावेंगे ॥

(४) अपना स्थान डाक खाना जिला साफ अक्षरों में लिखना चाहिये यदि शहर होतो मुहल्ला वा प्रसिद्धि स्थान भी लिखना चाहिये ॥

नाम पुस्तक	दाम	नामपुस्तक	दाम
आत्मानु शासन सटीक गत्ता		हनुमान चरित्र बचनका	=)
वैठन सहित	३)	मिथ्या प्रचार	=)
पार्श्वपुराणभाषा छन्द बन्ध कोष		पंचस्तोत्र भाषा जिसमें भक्तामर	
सहित	१।)	कल्याण मंदिर बिषापहार एकी	
समयसार नाटक बनारसीदास	॥=	भाव भूपालचौबीसी	=)
बर्तमान चौबीसी विधान (पाठ)	॥=)	नित्य नेम पूजा सटीक	॥)
द्वादशानुप्रेक्षा बड़ी	॥=)	चारपाठ संगूह	-)
* भाषा पूजन संगूह १३ पूजा		भक्तामर भाषा	-)
३ विधान	॥=)	भक्तामर मूल	)॥।
* जैन प्रथमपुस्तक	।)	एकी भाव भाषा	)॥
* जैन द्वितीय पुस्तक	॥)	बिषापहार भाषा	)॥।
* जैनबूतकथासंगूह नवरत्नभाषा	।=)	जिनगुण मुक्तावली भाषा	)॥।
भूधर जैन शतक सटीक	॥)	बारहमासा बज्रदन्तचक्रवर्ति	-)
सूक्त मुक्तावली भाषा	।)	* बारह मासा मुनिराज	)॥।
* स्वानुभव दर्पण योग सार सटीक	।)	* पंचपरमेष्टी मंगल अर्हत सिद्ध	
सज्जन चित्त वल्लभ ५ टीका	।॥)	आचार्य उपाध्याय साधु मंगल	=)
* सज्जनचित्तवल्लभभाषा टीका	≡)	* पंचकल्याण मंगल	-)॥
छहढाल सटीक दौलत राम	।-)	* बाईस परीषह योगीरासा	-)॥
* छहढाला सटीक बुधजन	≡)	* आलोचना पाठ सटीक	-)॥
* छहढाल सटीक द्यानत	=)॥	* शील कथा बड़ी छन्द बन्ध	।=)
* तत्वार्थ सूत्र मूल मोटे	≡)	शील कथा बचनका	।)
द्रव्यसंग्रह सटीक	।)	दर्शन कथा बड़ी छन्द बन्ध	।=)